|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| 18. Oktober | | | |
| **Fest des Heiligen Lukas, Evangelist** | | | |
| Lesung: 2 Tim 4,10-17b; Evangelium: Lk 10,1-9 | | | |
|  |  | |  |
| Eröffnung: | GL 381, 1+2 | | Dein Lob, Herr, ruft der Himmel aus |
|  | GL 481, 1+4+5 | | Sonne der Gerechtigkeit |
|  |  | |  |
| Kyrie: | GL 151 | | Herr, erbarme dich |
|  | GL 164 | | Der in seinem Wort uns hält |
|  |  | |  |
| Gloria: | GL 167 | | Dir, Gott, im Himmel Preis und Ehr |
|  |  | |  |
| Antwortgesang: | Psalm 145, 10-13.17-18 | |  |
|  | Kehrvers: | |  |
|  | GL 76, 1 | | Der Herr ist nahe |
|  | GL 657, 3 | | Dein Erbarmen, o Herr |
|  | Oder Psalmenlied: | |  |
|  | GL 143, 1 | | Mein ganzes Herz erhebet dich |
|  |  | | |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 5 |  | |
|  | Vers: |  | |
|  | *So spricht der Herr:* | | |
|  | *Ich habe euch erwählt und dazu bestimmt,* | | |
|  | *dass ihr Frucht bringt und dass eure Frucht bleibt.* | | |
|  |  | | |
|  |  |  | |
| Gabenbereitung: | GL 484, 1+3+4 | Dank sei dir, Vater | |
|  | GL 361, 1-3 | Mein schönste Zier | |
|  | GL 543, 1+4+5 | Wohl denen, die da wandeln | |
|  | GL 281, 2+3 | Seht, wie ich, der | |
|  |  |  | |
| Sanctus: | GL 199 | Heilig | |
|  |  |  | |
| Agnus Dei: | GL 202 | O du Lamm Gottes | |
|  |  |  | |
| Danksagung: | GL 357, 2 | Du meine Perl, du werte Kron | |
|  |  |  | |
| Schluss: | GL 489, 1-3 | Lasst uns loben | |